सुभाषितानि

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» आलस्य मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु और उद्यम सबसे बड़ा मित्र

प्रश्न 1 (आसान). मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु क्या है?
उत्तर – आलस्य

प्रश्न 2 (आसान). परिश्रम के समान कौन नहीं है?
उत्तर – मित्र

प्रश्न 3 (मध्यम). आलस्य क्यों मनुष्य का शत्रु है?
उत्तर – क्योंकि यह उसे काम करने से रोकता है और प्रगति में बाधा डालता है।

प्रश्न 4 (कठिन). उद्यम मनुष्य का मित्र क्यों है?
उत्तर – क्योंकि परिश्रम करके मनुष्य कभी दुखी नहीं होता और उसे सफलता प्राप्त होती है।

» गुणी और बलवान ही गुणों और बल को पहचानते हैं

प्रश्न 5 (आसान). बल को कौन पहचानता है?
उत्तर – बलवान

प्रश्न 6 (आसान). वसंत के गुण को कौन पहचानता है?
उत्तर – कोयल

प्रश्न 7 (मध्यम). हाथी किसका बल नहीं पहचानता?
उत्तर – मूषक (चूहे) का नहीं, बल्कि सिंह (शेर) का बल पहचानता है।

प्रश्न 8 (कठिन). इस श्लोक से हमें जीवन में क्या सीख मिलती है?
उत्तर – हमें सीख मिलती है कि दूसरों के गुणों और क्षमताओं को पहचानने के लिए हमें खुद भी गुणी और समझदार बनना चाहिए। हमें विनम्र होकर दूसरों की अच्छाइयों को समझना चाहिए।

» कारण से क्रोधित व्यक्ति और अकारण द्वेषी का स्वभाव

प्रश्न 9 (आसान). जो व्यक्ति किसी वजह से गुस्सा होता है, वह वजह खत्म होने पर क्या करता है?
उत्तर – शांत हो जाता है।

प्रश्न 10 (आसान). अगर किसी का मन बिना किसी कारण के द्वेषी हो, तो उसे खुश करना कैसा होता है?
उत्तर – बहुत मुश्किल या असंभव।

प्रश्न 11 (मध्यम). कारण से क्रोधित व्यक्ति और अकारण द्वेषी व्यक्ति में क्या मुख्य अंतर है?
उत्तर – कारण से क्रोधित व्यक्ति का गुस्सा कारण के हटने पर खत्म हो जाता है, जबकि अकारण द्वेषी का द्वेष बिना किसी कारण के होता है और उसे संतुष्ट करना कठिन होता है।

» बुद्धिमानों की विशेषता: अनकही बातों को भी समझना

प्रश्न 12 (आसान). जो बातें कही गई हों, उन्हें कौन समझ लेता है?
उत्तर – पशु भी समझ लेते हैं।

प्रश्न 13 (आसान). अनकही बातों को कौन समझता है?
उत्तर – पंडित जन या बुद्धिमान व्यक्ति।

प्रश्न 14 (मध्यम). बुद्धिमानों की मुख्य विशेषता क्या है, जो पशुओं से अलग है?
उत्तर – बुद्धिमान जन अनकही बातों का भी अनुमान लगा लेते हैं, जबकि पशु केवल कही गई बातें समझते हैं।

प्रश्न 15 (कठिन). इस श्लोक के अनुसार, 'परेंगितज्ञानफला हि बुद्धयः' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि बुद्धिमानों की बुद्धि दूसरों के संकेत से उत्पन्न ज्ञान के फल वाली होती है, यानी वे दूसरों के इशारों और अनकही बातों से भी बहुत कुछ समझ जाते हैं।

» क्रोध मनुष्य का पहला और विनाशकारी शत्रु

प्रश्न 16 (आसान). मनुष्य का प्रथम शत्रु कौन है?
उत्तर – क्रोध

प्रश्न 17 (आसान). क्रोध कहाँ स्थित होता है?
उत्तर – शरीर में

प्रश्न 18 (मध्यम). क्रोध शरीर का विनाश कैसे करता है, श्लोक के अनुसार समझाओ।
उत्तर – श्लोक के अनुसार, क्रोध शरीर के अंदर रहकर उसे वैसे ही नष्ट करता है, जैसे लकड़ी के अंदर छिपी हुई आग उसी लकड़ी को जलाकर राख कर देती है।

प्रश्न 19 (कठिन). क्या क्रोध बाहरी शत्रु से अधिक खतरनाक है? अपने विचार संस्कृत में एक वाक्य में व्यक्त करो।
उत्तर – आन्तरिकः क्रोधः बाह्यशत्रुतः अधिकं भयानकः अस्ति, यतः सः देहं दहति।

» समान स्वभाव वालों में ही मित्रता

प्रश्न 20 (आसान). हिरण किसके साथ चलते हैं?
उत्तर – हिरण हिरणों के साथ चलते हैं।

प्रश्न 21 (आसान). गायें किसके साथ चलती हैं?
उत्तर – गायें गायों के साथ चलती हैं।

प्रश्न 22 (मध्यम). बुद्धिमान लोग किनके साथ दोस्ती करते हैं?
उत्तर – बुद्धिमान लोग बुद्धिमान लोगों के साथ ही दोस्ती करते हैं।

प्रश्न 23 (कठिन). इस श्लोक के अनुसार, सच्ची मित्रता की क्या शर्त है?
उत्तर – सच्ची मित्रता के लिए लोगों का स्वभाव और उनकी आदतें समान होनी चाहिए।

» फल और छाया देने वाले महावृक्ष का महत्व

प्रश्न 24 (आसान). श्लोक में किस प्रकार के वृक्ष की सेवा करने की सलाह दी गई है?
उत्तर – फल और छाया देने वाले महावृक्ष की।

प्रश्न 25 (आसान). यदि वृक्ष से फल न मिलें, तो क्या ज़रूर मिलता है?
उत्तर – छाया ज़रूर मिलती है।

प्रश्न 26 (मध्यम). यह श्लोक हमें जीवन में किन लोगों का साथ चुनने की प्रेरणा देता है?
उत्तर – यह श्लोक हमें ऐसे लोगों का साथ चुनने की प्रेरणा देता है जो हमें प्रत्यक्ष लाभ (फल) के साथ-साथ अप्रत्यक्ष सहारा और शांति (छाया) भी दे सकें।

प्रश्न 27 (कठिन). इस श्लोक से आप जीवन में क्या महत्वपूर्ण सीख ले सकते हैं?
उत्तर – इस श्लोक से हम यह सीख सकते हैं कि हमें हमेशा ऐसे व्यक्तियों या संस्थाओं का आश्रय लेना चाहिए जो हमें बहुमुखी लाभ दे सकें। यदि हमें उनसे सीधा लाभ न भी मिले, तो भी उनका साथ हमें सुरक्षा, शांति और अप्रत्यक्ष सहारा अवश्य प्रदान करेगा।

» कोई भी वस्तु या व्यक्ति निरर्थक नहीं: योजक की दुर्लभता

प्रश्न 28 (आसान). इस श्लोक के अनुसार, क्या कोई अक्षर ऐसा है जिसमें मंत्र न हो?
उत्तर – नहीं, कोई भी अक्षर मंत्रहीन नहीं है।

प्रश्न 29 (आसान). क्या कोई जड़ ऐसी है जिसमें औषधि के गुण न हों?
उत्तर – नहीं, कोई भी जड़ औषधि रहित नहीं है।

प्रश्न 30 (मध्यम). श्लोक में 'अयोग्यः पुरुषः नास्ति' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि कोई भी व्यक्ति पूरी तरह से अयोग्य नहीं होता, हर किसी में कोई न कोई विशेषता या क्षमता होती है।

प्रश्न 31 (कठिन). इस श्लोक का मुख्य संदेश क्या है?
उत्तर – श्लोक का मुख्य संदेश यह है कि कोई भी वस्तु या व्यक्ति निरर्थक नहीं होता; बस उन्हें सही ढंग से पहचानने और उपयोग करने वाला 'योजक' ही दुर्लभ है।

» महान व्यक्तियों की समरूपता: संपत्ति और विपत्ति में

प्रश्न 32 (आसान). महान व्यक्ति किन दो परिस्थितियों में एक समान रहते हैं?
उत्तर – संपत्ति (खुशी) और विपत्ति (कठिनाई) में।

प्रश्न 33 (आसान). सूर्य किस समय लाल होता है?
उत्तर – उदय और अस्त दोनों समय।

प्रश्न 34 (मध्यम). इस श्लोक से हमें क्या सीख मिलती है?
उत्तर – यह श्लोक हमें सिखाता है कि जीवन में कैसी भी परिस्थितियां आएं, हमें धैर्यवान और स्थिर रहना चाहिए, अपने मूल स्वभाव से नहीं भटकना चाहिए।

प्रश्न 35 (कठिन). क्या आप अपने जीवन से किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण दे सकते हैं जो इस श्लोक की सीख पर खरा उतरता हो?
उत्तर – उत्तर छात्र के व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित होगा, उदाहरण के लिए 'मेरे पिताजी हमेशा शांत रहते हैं, चाहे घर में कोई खुशी का मौका हो या कोई मुश्किल, वे कभी अपना धैर्य नहीं खोते।'

» संसार में कुछ भी व्यर्थ नहीं, सबका अपना महत्व

प्रश्न 36 (आसान). संसार में क्या निरर्थक नहीं है?
उत्तर – संसार में कुछ भी निरर्थक नहीं है।

प्रश्न 37 (आसान). घोड़ा किस काम में वीर है?
उत्तर – घोड़ा दौड़ने में वीर है।

प्रश्न 38 (मध्यम). गधे का महत्व किस काम में बताया गया है?
उत्तर – गधे का महत्व बोझ ढोने में बताया गया है।

प्रश्न 39 (कठिन). इस श्लोक से हमें क्या शिक्षा मिलती है?
उत्तर – इस श्लोक से हमें यह शिक्षा मिलती है कि संसार में हर प्राणी या वस्तु का अपना विशेष महत्व होता है और कोई भी चीज़ व्यर्थ नहीं है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. एक छात्र को वार्षिक परीक्षा में प्रथम आना है। आलस्य और उद्यम उसके लक्ष्य को कैसे प्रभावित करेंगे?

› पहला कदम: छात्र अगर आलस्य करेगा, तो वह पढ़ाई को टालता रहेगा, नोट्स नहीं बनाएगा और अभ्यास नहीं करेगा।

› दूसरा कदम: आलस्य के कारण वह समय पर पाठ्यक्रम पूरा नहीं कर पाएगा और परीक्षा में प्रदर्शन खराब होगा।

› तीसरा कदम: इसके विपरीत, अगर छात्र उद्यम (परिश्रम) करेगा, तो वह नियमित रूप से पढ़ाई करेगा, हर दिन अभ्यास करेगा।

› चौथा कदम: उद्यम के बल पर वह पूरे पाठ्यक्रम को अच्छे से समझकर समय पर पूरा कर पाएगा, जिससे परीक्षा में उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह अच्छा प्रदर्शन करेगा।

उत्तर – आलस्य छात्र को उसके लक्ष्य से दूर ले जाएगा, जबकि उद्यम उसे प्रथम स्थान प्राप्त करने में सहायक होगा।

उदाहरण 2. श्लोक में कोयल और कौए का उदाहरण किस संदर्भ में दिया गया है?

› पहला चरण: श्लोक को ध्यान से पढ़ें और उसमें कोयल (पिकः) और कौआ (वायसः) शब्द ढूंढें।

› दूसरा चरण: उनके साथ जुड़े शब्द देखें – 'पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः'।

› तीसरा चरण: इसका अर्थ समझें – कोयल वसंत के गुण को जानती है, कौआ नहीं।

› चौथा चरण: अब इस उदाहरण को मुख्य विचार से जोड़ें कि 'गुणी ही गुण को पहचानता है'।

› पांचवां चरण: स्पष्ट करें कि वसंत की मधुरता, हरियाली और फूलों का खिलना ये सब वसंत के 'गुण' हैं। कोयल मधुर गाना गाती है और वसंत का आनंद लेती है, इसलिए वह वसंत के गुण को पहचानती है। कौआ कर्कश होता है, उसे वसंत की सुंदरता से कोई फर्क नहीं पड़ता, इसलिए वह उसे नहीं पहचानता।

उत्तर – श्लोक में कोयल और कौए का उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि गुणी व्यक्ति ही गुणों को पहचानता है, निर्गुण नहीं। कोयल स्वयं मधुर और गुणी होती है, इसलिए वह वसंत की सुंदरता और महत्व को पहचानती है। जबकि कौआ निर्गुण होता है, वह वसंत के गुणों को नहीं समझ पाता। यह दर्शाता है कि किसी चीज़ के मूल्य या गुणवत्ता को समझने के लिए, खुद में भी वैसी ही समझ या गुण होने चाहिए।

उदाहरण 3. गीता अपनी सहेली राधा से नाराज़ है क्योंकि राधा ने उसका पेन बिना पूछे ले लिया। बाद में राधा ने माफी मांगी और पेन वापस कर दिया। गीता का गुस्सा शांत हो गया। यह किस प्रकार का स्वभाव दर्शाता है?

› यहाँ गीता का गुस्सा किसी 'कारण' से जुड़ा था - राधा का पेन लेना।

› जब 'कारण' (पेन वापस करना और माफी मांगना) समाप्त हुआ, तो गीता का गुस्सा भी 'शांत' हो गया।

› यह स्वभाव उन लोगों का है जो किसी निमित्त (कारण) से क्रोधित होते हैं।

उत्तर – यह 'कारण से क्रोधित व्यक्ति' का स्वभाव दर्शाता है।

उदाहरण 4. एक नया लड़का कक्षा में आया है। वह कुछ कह नहीं रहा, पर बहुत सहमा हुआ और उदास लग रहा है। एक बुद्धिमान छात्र उसे कैसे समझेगा और उसकी मदद करेगा?

› पहला कदम: बुद्धिमान छात्र लड़के के शारीरिक हाव-भाव देखेगा। जैसे, उसके कंधे झुके हुए हैं, वो किसी से आँखें नहीं मिला रहा, और चुपचाप एक कोने में बैठा है।

› दूसरा कदम: वह बिना पूछे ही अंदाज़ा लगाएगा कि शायद लड़का घबराया हुआ है, नया होने की वजह से अकेला महसूस कर रहा है, या फिर उसे किसी मदद की ज़रूरत है।

› तीसरा कदम: वह सीधे उससे सवाल पूछने की बजाय, पहले उसके पास जाएगा, मुस्कुराएगा और उसे दोस्ती का हाथ बढ़ाएगा, ताकि लड़का सहज महसूस करे।

› चौथा कदम: अगर लड़का फिर भी बात न करे, तो वह उसे कक्षा और स्कूल के बारे में बताएगा या पढ़ाई में मदद की पेशकश करेगा, जिससे लड़के को लगे कि कोई उसकी परवाह कर रहा है, बिना कुछ कहे।

उत्तर – बुद्धिमान छात्र लड़के के अशाब्दिक संकेतों को समझेगा और बिना उसे दबाव डाले, दोस्ती का हाथ बढ़ाएगा और मदद की पेशकश करेगा, ताकि वह सहज महसूस करे।

उदाहरण 5. प्रश्न: 'क्रोधो हि शत्रुः' इस श्लोक का केंद्रीय भाव क्या है?

› पहला चरण: श्लोक को ध्यान से पढ़ें और एक-एक शब्द का अर्थ समझने की कोशिश करें।

› दूसरा चरण: 'क्रोधो हि शत्रुः प्रथमो नराणां' का अर्थ है कि क्रोध मनुष्यों का पहला शत्रु है।

› तीसरा चरण: 'देहस्थितो देहविनाशनाय' का अर्थ है कि यह शरीर में रहकर शरीर को नष्ट करता है।

› चौथा चरण: 'यथा काष्ठगतो हि वह्निः स एव वह्निर्दहते शरीरम्' का अर्थ है कि जैसे लकड़ी में छिपी आग लकड़ी को जला देती है, वैसे ही यह क्रोध शरीर को जला देता है।

› पांचवां चरण: इन सभी भावों को मिलाकर एक केंद्रीय विचार बनाएं।

उत्तर – उत्तर: इस श्लोक का केंद्रीय भाव यह है कि क्रोध मनुष्य का सबसे पहला और सबसे विनाशकारी शत्रु है, जो शरीर के अंदर रहकर उसे उसी तरह नष्ट कर देता है जैसे लकड़ी में छिपी आग लकड़ी को जला देती है। यह हमें क्रोध से दूर रहने की प्रेरणा देता है।

उदाहरण 6. यह श्लोक हमें क्या सीख देता है 'मृगा मृगैः सघोमनुव्रजन्ति, गावश्च गोभिः तुरगास्तुरगैः। मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः, समान-शील-व्यसनेषु सख्यम्।।'?

› पहला चरण है, श्लोक का शाब्दिक अर्थ समझना। 'मृगाः मृगैः सह' यानी हिरण हिरणों के साथ, 'गावश्च गोभिः' यानी गायें गायों के साथ, 'तुरगास्तुरगैः' यानी घोड़े घोड़ों के साथ चलते हैं।

› दूसरा चरण है, इसके अगले भाग को देखना: 'मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः' यानी मूर्ख लोग मूर्खों के साथ और बुद्धिमान लोग बुद्धिमानों के साथ रहते हैं।

› तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण चरण है, अंतिम पंक्ति का अर्थ समझना: 'समान-शील-व्यसनेषु सख्यम्' यानी एक जैसे स्वभाव और आदतों (व्यसन का अर्थ यहाँ स्वभाव है, बुरी आदतें नहीं) वालों में ही दोस्ती होती है।

› इन सब चरणों को मिलाकर, हम इसका सार निकालते हैं।

उत्तर – यह श्लोक हमें सिखाता है कि दोस्ती केवल उन लोगों के बीच ही संभव है जिनका स्वभाव, आदतें और रुचियां एक जैसी हों, क्योंकि तभी वे एक-दूसरे को बेहतर समझ पाते हैं और साथ निभा पाते हैं।

उदाहरण 7. इस श्लोक के अनुसार, हमें किस प्रकार के वृक्ष का आश्रय लेना चाहिए और क्यों?

› पहला चरण है श्लोक का पहला भाग समझना: 'सेवितव्यो महावृक्षः फलच्छायासमन्वितः।' इसका मतलब है कि हमें फल और छाया से युक्त बड़े वृक्ष का आश्रय लेना चाहिए।

› दूसरा चरण है श्लोक का दूसरा भाग समझना: 'यदि दैवात् फलं नास्ति छाया केन निवार्यते॥' इसका मतलब है कि अगर भाग्य से फल न भी मिलें, तो उसकी छाया को कोई नहीं रोक सकता।

› इन दोनों को जोड़कर, हमें समझ आता है कि हमें ऐसे वृक्ष का आश्रय लेना चाहिए जो हमें दोहरी सुरक्षा और लाभ दे - फल (जो प्रत्यक्ष लाभ हैं) और छाया (जो अप्रत्यक्ष लाभ, जैसे आराम और सुरक्षा है)।

उत्तर – हमें ऐसे बड़े वृक्ष का आश्रय लेना चाहिए जो फल और छाया दोनों से युक्त हो। ऐसा इसलिए क्योंकि भले ही हमें फल न भी मिलें, उसकी छाया तो हमें मिलेगी ही, और वह बहुत ज़रूरी होती है।

उदाहरण 8. इस श्लोक के अनुसार, संसार में सबसे दुर्लभ क्या है?

› श्लोक का पहला भाग कहता है 'अमन्त्रामक्षरं नास्ति' (कोई अक्षर मंत्रहीन नहीं), 'नास्ति मूलमनौषधम्' (कोई जड़ औषधि रहित नहीं), 'अयोग्यः पुरुषः नास्ति' (कोई पुरुष अयोग्य नहीं)।

› यह तीनों बातें बताती हैं कि कोई भी चीज़ या व्यक्ति अपने आप में बेकार नहीं होता।

› श्लोक का अंतिम भाग कहता है 'योजकस्तत्रा दुर्लभः' (वहाँ जोड़ने वाला दुर्लभ है)।

› इसका अर्थ है कि सभी चीज़ों और व्यक्तियों में गुण होते हैं, बस उन्हें सही ढंग से पहचानने और जोड़ने वाला व्यक्ति ही मुश्किल से मिलता है।

उत्तर – इस श्लोक के अनुसार, संसार में सबसे दुर्लभ 'योजक' (चीज़ों को सही ढंग से जोड़ने वाला) है।

उदाहरण 9. श्लोक के अनुसार, महान व्यक्तियों की तुलना सूर्य से क्यों की गई है?

› पहले श्लोक को समझें: 'संपत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता। उदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमये तथा।।'

› इसका अर्थ है कि महान लोग संपत्ति और विपत्ति दोनों में एक जैसे रहते हैं।

› उदाहरण दिया गया है कि सूर्य उदय और अस्त दोनों समय लाल रहता है।

› इस उदाहरण से समानता स्थापित की गई है कि जैसे सूर्य का रंग नहीं बदलता, वैसे ही महान व्यक्तियों का स्वभाव भी नहीं बदलता, चाहे परिस्थिति कैसी भी हो।

उत्तर – श्लोक के अनुसार, महान व्यक्तियों की तुलना सूर्य से इसलिए की गई है क्योंकि जिस प्रकार सूर्य उदय और अस्त दोनों समय एक समान (लाल) रहता है, उसी प्रकार महान व्यक्ति संपत्ति (खुशी और समृद्धि) और विपत्ति (कठिनाई और दुख) दोनों परिस्थितियों में अपने स्वभाव में स्थिर, शांत और एकरूप रहते हैं।

उदाहरण 10. श्लोक में दिए गए उदाहरण के अनुसार, घोड़े और गधे का महत्व कैसे अलग-अलग है?

› श्लोक कहता है: 'अश्वश्चेद् धावने वीरः भारस्य वहने खरः।'

› इसका मतलब है कि घोड़ा दौड़ने में बहुत बहादुर, बहुत तेज़ होता है।

› वहीं, गधा बोझ ढोने में वीर होता है, यानी भारी सामान उठाने में माहिर होता है।

› तो, घोड़ा अपनी तेज़ी के लिए महत्वपूर्ण है, और गधा अपनी ताकत और सहनशीलता के लिए।

उत्तर – घोड़ा दौड़ने में और गधा बोझ ढोने में महत्वपूर्ण है। दोनों की अपनी-अपनी विशेषता है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह श्लोक परीक्षा में संदर्भ सहित भावार्थ (meaning with context) के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसे अच्छे से समझकर याद करें।

• यह श्लोक बोर्ड परीक्षा में 'श्लोक का अन्वय' और 'भावार्थ' लिखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान से समझो और याद करो।

• यह श्लोक 'बुद्धिमत्ता' पर आधारित है और अक्सर इसका भावार्थ या 'अनकही बातों को समझने वाले' के संदर्भ में प्रश्न पूछे जाते हैं। श्लोक के मूल भाव को अच्छे से समझ लेना बहुत ज़रूरी है।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है, बच्चों। इसका अर्थ और भावार्थ अच्छे से समझ लेना, क्योंकि परीक्षाओं में इसपर आधारित प्रश्न ज़रूर आते हैं।

• यह श्लोक अक्सर 'भावार्थ लेखन' या 'संस्कृत में व्याख्या' के लिए आता है। इसके मुख्य संदेश को अच्छे से समझ लेना।

• यह श्लोक 'नैतिक शिक्षा' वाले प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण है, जहाँ आपको श्लोक का भावार्थ और उससे मिलने वाली सीख बतानी होती है।

• यह श्लोक भावार्थ और श्लोक पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है। इसके मुख्य शब्दों के अर्थ और संदेश को ध्यान से समझें।

• यह श्लोक अक्सर 'भावार्थ लिखो' या 'समानता बताओ' जैसे प्रश्नों में पूछा जाता है। सूर्य का उदाहरण देकर अपनी बात को समझाना याद रखें।

• यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन का एक बड़ा सबक सिखाता है। इससे संबंधित 'भावार्थ' या 'शिक्षा' वाले प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› आलस्य: सबसे बड़ा शत्रु; उद्यम: सबसे बड़ा मित्र, दुख नहीं देता।

› कारण क्रोध: कारण हटने पर शांत। अकारण द्वेषी: संतुष्ट करना कठिन।

› बुद्धिमान अनकही बातों को भी समझते हैं, पशु सिर्फ़ कही बातें।

› क्रोध मनुष्य का पहला, शरीरस्थित, विनाशकारी शत्रु; लकड़ी में आग जैसा।

› समान स्वभाव, आदतें वालों में ही मित्रता।
› फल-छाया वाले महावृक्ष का आश्रय लो; फल न मिले तो छाया तो मिलेगी ही।
› कोई भी वस्तु/व्यक्ति व्यर्थ नहीं; योजक है दुर्लभ।
› महान व्यक्ति संपत्ति-विपत्ति में सूर्य समान स्थिर और एकरूप रहते हैं।
› संसार में कुछ भी व्यर्थ नहीं, सबका अपना महत्व।